UGC Journal Details

Name of the Journal :	Research Journey
ISSN Number :	
e-ISSN Number :	23487143
Source:	UNIV
Subject:	Marathi
Publisher:	Swatidhan International Publication
Country of Publication:	India
Broad Subject Category:	Multidisciplinary

Print

KVN Naik Arts, Commerce & Science College, IQAC OFFICE

Co-ordinator
I.Q.A.C.
KVN Naik Arts, Commerce
& Science College, Canada Corner,
Nashik-422 002.

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019), (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Vol. 6, Issue 3
Peer Reiewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
July-Aug-Sept. 2019

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों के प्रमुख नारी पात्र

प्रा.श्रीमती नंदादेवी बोरसे
कां.व्ही.एन.नाईक महाविद्यालय,
कॅनडा कॉर्नर, नाशिक.२
मो.नं. ९८२२७६२३४९
Email ID : nandadeviborse@gmail.com

रचनाकार अपनी कल्पना से नई सृष्टी निर्माण करता है। शशिप्रभा शास्त्रीने अपने उपन्यासों में ऐसी ही नई सृष्टी का निर्माण किया है। इस नई सृष्टी का अध्ययन, चिंतन –मनन एक अलग आनंद प्रदान करती है। उपन्यास में कथानक के बाद महत्वपूर्ण तत्व पात्र–योजना का होता है। उपन्यास की मूल संवेदना और युगीन समस्याएँ उसके चरित्रों के माध्यम से ही प्रकट होती है। सचमुच उपन्यास की कहानी को गति प्रदान करना पात्रों का ही काम है। इस दृष्टि से शशिप्रभाजी के उपन्यासों में समुचित पात्र योजना तथा चरित्र–चित्रण के माध्यम से मानव जीवन के अनेक पहलुओं पर विचार किया गया है। लेखिकाने अपनी रचनाओं में जिवंतता, संघर्षशीलता, समझौतावादी दृष्टि, विद्रोही रूप, पलायनवादिता तथा निराशा जैसे स्वरों को पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है।

उपन्यास के पात्र जिवंत तथा संघर्षशील रहते हुए भी परिस्थितियों से कभी–कभी समझौता करने लगते है। इस प्रयास में कभी–कभी पात्र टूट भी जाते है। हरदेवलाल तथा महाराज अजित सिंह जैसे पथभ्रष्ट जोगों के हाथ में रियासत की बागडोर आ चुकी है, जो कि पतन की शुरूआत कर देती है। 'अमलतास' उपन्यास की कामदा–जुही तथा बडे दीवानजी पूरी कोशिश करके भी अमलतास कोठी तथा रियासत में शांति स्थापित नहीं कर पाते है। अंतत: पलायन को विवश होते है। 'नावे' उपन्यास में प्रतिभा सम्पन्न मालती अपनी आर्थिक विपन्नता के चलते सोमजी जैसे व्यक्ति के चंगुल में फॅस जाती है। किंतु यथार्थ की प्रतिमूर्ति रेखा निगम की सहायता से अंतत: उसे सहारा मिलता है।

शशिप्रभा के उपन्यास 'सीढियॉ' में अभिशप्त मनीषी खुद के प्रयास से डॉक्टर बन जाती है और जीवन की ऊँचाइयों को पाने के लिए उपर चढती है। लेकिन दुर्भाग्य से ऊपर चढने के प्रयास में उसे अपेक्षित सफलता नहीं मिलती है। सुकेत के समायोजन में मनीषी का मूल्यवान समय नष्ट होता रहता है। उपन्यास 'परछाइयों के पीछे' में सुमित्रा–महिपाल जैसे पात्रों के मध्य देव–दानव संघर्ष छिडा हुआ है। एक दिन वह भी आता है जब देवी रूपा सुमित्रा को कोर्ट की शरण लेनी पडती है। 'क्योंकि' उपन्यास में भौतिकता की दौड में परेशान आभा–दीपक जैसे लोगों की हताशा तथा उल्लास व्यक्त है। और वर्तमान नियतिहीन पीढी के हाथों उनको ठगाने की नौबत आ जाती है।

शशिप्रभा के उपन्यास 'वीरान रास्ते और झरना' में अनमोल विवाह की शिकार ममता की कहानी है। यद्यपी ममता के सारे चरित्र का प्रकटीकरण बेटी अचला द्वारा किया जाता है। अपने चाचा के प्रति अचला का उग्र विद्रोह न्याय संगत नहीं कहा जा सकता है और यथार्थता तथा अनिंद्य की कल्पनाशीलता और स्वच्छंदता के मध्य द्वंद्व छिडा हुआ है। तनु के चरित्र में व्यापक समाहार की शक्ति है। उपन्यास 'खामोश होते सवाल' में सेठ रूपचंद, केसरीराम तथा अनुराधा की कथा है। अनुराधा बहू बनकर आती है किंतु व्यसनी पति द्वारा उसे प्रताडित किया जाता रहता है। भौतिक सम्पन्नता के बीच भी अनुराधा असंतुष्ट तथा थकी हुई दिखाई पडती है।

E-ISSN : 2348-7143
July-Aug-Sept. 2019

उपन्यास 'परसों के बाद' में चंद्राजी–विक्रमजी की पारिवारिक गाथा है। जहाँ अपनी पोती मुन्नों के जन्मदिन मनाने तथा उसका दुलार करने के लिए वे तरसते है। उपन्यास के पात्र माधवी तथा शंकर का माता–पिता के प्रति निरक्षेप भाव उनके आचरण से प्रकट होता है। उपन्यास 'ये छोटे महायुध्द' में गार्गी–लोपा (माता–बेटी) के आग्रह दुराग्रह की कहानी है। गार्गी का चरित्र रूढियों में जकडा है। लोपा व स्वरूपनारायण समझौता वादी आचरण का परिचय देते है। उपन्यास 'उम्र एक गलियारे की' मुख्य पात्र सुनंदा मुक्त यौन संबंध की पुजारिनी है। गुणसंपन्न व्यक्ति नवल मोहन जैसे पति के होते हुए भी वह तीसरे व्यक्ति की तलाश में लगी रहती है।

उपन्यास 'मीनारे' में वर्तमान शिक्षा पध्दती के काले कारनामों को उजागर किया गया है, जहाँ ईचार्ज प्रिंसिपल प्रेमा दिवान को नीचा दिखाया जाता है। तथा शैक्षणिक प्रगति की योजनाओं से उन्हें रोका जाता है। उपन्यास 'हर दिन इतिहास' में घोर आशावादी स्वर व्यक्त हुआ है। वर्तिका जैसी युवती के चरित्र में घर तथा समाज को बाँधने की अपूर्व क्षमता है। इस प्रयास में वह अपने भाइयों महेश, रमेश के साथ जीवन पथ पर गतिशील रहती है। उपर वर्णित कृतियों के चरित्रों में से कुछ प्रमुख चरित्रों की चर्चा निम्नप्रकार से की गई है।

'अमलतास' उपन्यास की कामदा के रूप में भारतीय संस्कार में पली बढी नारी का वह रूप देखा जा सकता है, जहाँ उपेक्षित–प्रताडित पत्नी अपने पति में देवत्व देखती है। आपतकाल में वह उसकी मदद को पहुँच जाती है। कामदा अस्पताल में पत्नी के रूप में मिलने जाती है । कामदा १५ दिनों तक हरदेवलाल के साथ रहती है और उसके स्वास्थ्य की मंगल कामना ईश्वर से करती है।

उपन्यास 'सीढियॉं' में सुकेत–मनीषी के उम्र में माता–पुत्र जैसा अंतर है फिर भी दोनों में विपरीत आकर्षण विलक्षण है। सुकेत युवा हो रहा है और मनीषी यौवन के ढलान पर है। मनीषी के मन में दमित काम भावना उभर रही है – सुकेत की बातें, उसकी आकृति उसें भाती है। उसने सुपर्णा से कहा था कि वह सुकेत के सुख के लिए कुछ भी कर सक्ती है। लेकिन सामाजिक मर्यादा का भय बना रहता है। सुकेत के प्रति मनीषी का समर्पण बडे अपवाद को जन्म दे सकता है इसलिए वह पुनः डॉ. कश्यप पर विचार करने लगती है।

'परछाइयों हे पीछे' उपन्यास में सुमित्रा एव कामकाजी तथा व्यवहार कुशल महिला है। देखनेवाले उसे एक जीवट नारी मानते है। वह हर किसी को सलाह देती है तथा उनके दुख–तकलीफ में साथ पहुँचती है। वह अपने सांसारिक जीवन से परेशान है। वह अब पति से कानूनी विच्छेद कर लेना चाहती है। अलबत्ता उसकी इच्छा टूटने की नहीं थी। उसे लगता है, कि पति की आदत तथा आक्रोश ने उसे मौका ही नहीं दिया और बात बिगडती गई।

'क्योंकि उपन्यास में जहाँ मानव मनोवृत्तियों का चित्रण है, वहीं यह भी दर्शाया गया है कि आज का व्यक्ति किस प्रकार धन–दौलत के पीछे दीवाना बना है। आभा जैसी आत्मनिर्भर, कामकाजी महिला निहायत संकीर्ण सोच रखती है। उसमें कहीं तो अर्थ की चाह है और कहीं दौलत का प्रदर्शन, प्रलोभन ही उसकी प्रकृति है। सोने का लालच आभा में दिखाई देता है।

उपन्यास 'वीरान रास्तें और झरना' में अचला के सामने पारिवारिक रिश्ते–नाते में नया संबंध बोध, अनमेल विवाह, नैसर्गिक मनोवृत्ति एवं का आर्थिक दृष्टि से निर्बलता जैसी अनेक समास्याएँ खडी है। उसकी निरंकुशता का बढा कारण संरक्षक का अभाव है। अचला जैसी बेटी को शिक्षा के साथ संस्कार की

आवश्यकता है लेकिन अचला में विरोधी मानसिकता विकसित हो चली है। इसलिए अचला का चरित्र श्रेयस्कर न होकर घृणास्पद बन जाता है।

'ककरेखा' उपन्यास की तनु का दाम्पत्य जीवन सदा अतृप्त रहा। पति के रिटायर होने के बाद भी उसे कोई सुख नहीं मिला, बल्कि पति की दमित काम कुंठा से नई समस्या खडी हो गई है। वह सोचती है कि उसने क्या अपराध किया है कि वह अकेली घुलती रहे। कभी – कभी उसे लगता है कि, सबकुछ उसके मन के अनुकूल होना चाहिए ।

'खामोश होते सवाल' उपन्यास में यह कहना सारासार सत्य होगा कि पुरूष की तुलना में नारी की कुछ अलग मर्यादा हुआ करती है। भविष्य के प्रति नारी के मन में पुरूषों की तुलना में आशंका अधिक होती है। व्यसनी पति की कटू वाणी से दग्ध अनुराधा के मन में आत्महत्या के विचार भी आते है लेकिन वह सहसा संभल जाती है। उसे लगता है कि औरतें ही हमेशा क्यों मरती है? इसलिए वह अपनी संतान का भविष्य सोचती है। और सोचती है कि जब अपनी जीवन रक्षा होगी तभी व्यक्ति दूसरों की जीवन रक्षा करने में सफल हो पाएगा। एक नारी की संवेदनशीलता, विवेक सम्पन्नता, दूर दृष्टी ही परिवार को टूटने से बचा लेती है तथा नामी ग्रामी परिवार की बहू अनुराधा लोगों की दृष्टी में सम्मान की अधिकारिणी बन जाती है।

उपन्यास 'परसो के बाद की दादी चंद्राजी निहायत संवेदनशील तथा संतान वत्सला है। उनके चरित्र में संतान को लेकर बडा मोह है। जन्मदिन के बहाने चंद्राजी की खुशी की अभिव्यक्ति में सुनहरे भविष्य की कामना है। 'ये छोटे महायुध्द' उपन्यास की प्रमुख पात्र गार्गी को पिता द्वारा आर्यसमाजी संस्कार मिले है। दो पीढियों के मध्य जीवन शैली को लेकर संघर्ष छिडा है। गार्गी परंपरावादी जीवन शैली की पुजारी है, तो नई पीढी–बेटी, दामाद, नाती, पोते स्वतंत्र, मुक्त जीवनशैली के समर्थक है। आर्य समाजी मॉ लडके–लडकियों में विभाजक रेखा खींचती है। लडकियों के लिए चपर–चपर करना ठीक नहीं है। यहीं नहीं गार्गी कहती है। आग लगे इस जमाने को। जिसने बच्चे को बच्चा नहीं रहने दिया है। आचार–विचार में आग लग गई है। गार्गी जैसी रूढीवादी व्यक्ति को शांत बैठना स्वीकार नहीं है। वह महिला मंडल बनाकर आर्य समाज की उपदेशक बन जाती है। नीलमणि आश्रम ही उनके लिए जीवन का आखरी विराम सिध्द होता है।

उपन्यास 'उम्र एक गलियारे की' में सुनंदा के चरित्र में कहीं भी असामान्य स्थिती का बोध नहीं होता है। युवा नर–नारी की सोच उनके उम्र के हिसाब से ही होगी। पति द्वारा अतृप्त रहकर भी सुनंदा अंत में नवलमोहन के पास दिल्ली लौटती है। वैसे सुनंदा की उक्त सोच में कोई विसंगति बोध प्रतीत नहीं होता है। बल्कि यह तो सहज स्वाभाविक जीवन कटनेवाला वृत्तांत है। इस प्रकार सुनंदा के चरित्र मे वर्तमान स्वस्थ नारी समाज की पीठिका प्रस्तुत है।

'मीनारे' उपन्यास की प्रेमा दीवान उपप्राचार्य के रूप में कॉलेज का कामकाज देख रही थी। वह एक सरल, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ तथा अनुशासन प्रिय अध्यापिका है। लेकिन कॉलेज के वातावरण में ईमानदार व्यक्ति की कर्तव्यनिष्ठा कुंठित होती जाती है। प्रेमा दीवान जैसी कई नर–नारी अध्यापकों की पीडा पवित्र ज्ञान मंदिर में भी पूर्ण नहीं हो पाती। श्रीमती प्रेमा दीवान की प्राचार्य की अहंम भूमिका के कॉलेज प्रबंधन द्वारा शून्य में परिणत किया जाना इसी का उदाहरण है।

'हर दिन इतिहास' उपन्यास की वर्तिका जैसी युवती में साहसी प्रवृत्ति, प्रतिभाशाली दृष्टी, सामाजिकता की भावना, मातृ–पितृ प्रेम जैसी अनेक प्रवृत्तियॉ गोचर होती है। पूर्ण यौवना वर्तिका के पास डॉ. सिन्हा का बतौर जीवन साथी का प्रस्ताव आता है। लेकिन उसके सामने कई पारिवारिक समस्याएँ खडी है। डॉ.

सिन्हा के रूप में वर्तिका के समक्ष एक विकल्प रखकर लेखिकाने एक यथार्थोन्मुख आदर्शवादी की कल्पना की है।

इस प्रकार शशिप्रभा शास्त्रीजीने अपने उपन्यासों में विविधांनी नारी पात्रों का सृजन है।

आधार ग्रंथ

अमलतास – शशिप्रभा शास्त्री
नावे – शशिप्रभा शास्त्री
सीढियाँ – शशिप्रभा शास्त्री
परछाईयों के पीछे – शशिप्रभा शास्त्री
क्योंकि – शशिप्रभा शास्त्री
वीरान रास्ते और रस्ता – शशिप्रभा शास्त्री
खामोश होते सवाल – शशिप्रभा शास्त्री
परसों के बाद – शशिप्रभा शास्त्री
ये छोटे महायुध्द – शशिप्रभा शास्त्री
उम्र एक गलियारे की – शशिप्रभा शास्त्री
मीनारें – शशिप्रभा शास्त्री
ककरेखा – शशिप्रभा शास्त्री
हर दिन इतिहास – शशिप्रभा शास्त्री